आजीविका दीदी कैफे

महिलाएं बन रहीं आत्मनिर्भर

पवन कुमार

गुमला जिले के सिसई प्रखंड मुख्यालय के समीप वैष्णवी आजीविका दीदी कैफे है. 31 मई 2017को दीदी कैफे का उदघाटन हुआ. कैफे में आपको गरमागरम स्वादिष्ट समोसे और धुसका खाने को मिल जायेंगे, पर इस स्वाद के पीछे वैष्णवी आजीविका महिला समूह की महिलाओं की मेहनत छिपी है. वर्ष2008में वैष्णवी महिला समूह की स्थापना हुई. हेमा गुप्ता को समूह का अध्यक्ष बनाया गया. मुन्नी देवी सचिव और सुनैना देवी कोषाध्यक्ष बनीं. समूह की दीदियां आज बखूबी दीदी कैफे चला रही हैं. वो कहती हैं कि सबसे पहले एलइओ मैडम ने महिला समूह की जानकारी दी, साथ ही बताया कि समूह से जुड़ कर महिलाएं खुद का, परिवार का और समाज का कल्याण कर सकती हैं. इसके बाद सभी महिलाओं ने मिल कर समूह बनाने की दिशा में काम करना शुरू किया और धीर-धीरे समूह यहां तक पहुंच गया. मुख्यमंत्री दाल-भात योजना के तहत केंद्र संचालन की जिम्मेवारी से लेकर आजीविका दीदी कैफे का सफल संचालन इन दीदियों की सफलता की कहानी बयां कर रही है.

वैष्णवी आजीविका दीदी कैफे की दीदियां.

पहली बार समूह को मिला 5000 रुपये का ऋण

वैष्णवी महिला समूह की अध्यक्ष हेमा गुप्ता बताती हैं कि पहली बार बैंक से पांच हजार रुपये ऋण मिले थे. इसके बाद समूह की ग्रेडिंग हुई और समूह को 25,000 हजार रुपये का लोन मिला. सभी सदस्यों के बीच इस राशि का वितरण किया गया. सभी सदस्यों ने अपने-अपने हिस्से के पैसों को खेती-बारी और अन्य व्यवसाय में बतौर पूंजी इस्तेमाल किया और सही समय पर बैंक का लोन भी चुकता कर दिया. महिला समूह की महिलाओं की मेहनत और उत्साह को देखते हुए बैंक ने इन्हें ढाई लाख रुपये का लोन दिया.

मुख्यमंत्री दाल-भात योजना के तहत काम

महिला समूह के बेहतर कार्य को देखते हुए मुख्यमंत्री दाल-भात केंद्र के संचालन की जिम्मेदारी मिली. बैंक से लोन मिले ढाई लाख रुपये से समूह की दीदियों ने मुख्यमंत्री दाल-भात केंद्र के संचालन के लिए सामान खरीदा और केंद्र की शुरुआत की. दीदियों की इस पहल से उनके जीवन में बदलाव आना शुरू हो गया. इस कार्य को करने के बाद वैष्णवी महिला समूह की महिलाएं एनआरएलएम में शामिल हो गयीं.आंध्र प्रदेश से आयी टीम ने महिलाओं को प्रशिक्षण दिया. महिलाओं को बताया गया कि समूह का कार्य कैसे और किस तरीके से किया जाये, साथ ही इन्हें बताया गया कि समूह से जुड़ कर खुद की और दूसरी महिलाओं की जिंदगी को बेहतर बनाया जा सकता है. इस ट्रेनिंग का लाभ भी महिलाओं को मिला.

महिला समूहों की सामाजिक भागीदारी

सिसई प्रखंड में ग्रामीण क्षेत्र और जंगल ज्यादा है, लेकिन महिलाएं समूह से जुड़ कर आत्मनिर्भर हो रही हैं. यह इतना आसान नहीं था, पर महिलाएं घर की दहलीज लांघ आगे बढ़ कर महिला सशक्तीकरण का अहसास करा रही हैं. समूह की दीदियां कहती हैं कि अब महिलाएं गांव के सुख-दु:ख में भी हमेशा साथ खड़ी रहती हैं. सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती हैं. इनका सामाजिक दायरा बढ़ा है और दखल भी. सामाजिक कार्यों में शामिल होने का ही परिणाम है कि अब समूह की दीदियां अपने-अपने क्षेत्र में छोटे-छोटे घरेलू लड़ाई-झगड़ों का भी निबटारा करने में अहम भूमिका निभा रही हैं, साथ ही ग्रामीणों को विभिन्न मुद्दों पर जागरूक करने की भी कोशिश करती हैं. समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा है. अब अनपढ़ महिलाएं भी अपना हस्ताक्षर करने लगी हैं. कोषाध्यक्ष सुनैना देवी बताती हैं कि घर से बाहर निकलकर खुद पैसे कमाने और किसी के काम आने पर काफी अच्छा लगता है. अब भय दूर हो चुका है. अब धड़ल्ले से वह किसी भी मंच पर अपनी बात बखूबी रखती हैं. सचिव मुन्नी देवी कहती हैं कि आज के जमाने में पति-पत्नी दोनों के काम करने से ही घर-परिवार ठीक ढंग से चल पाता है.

आजीविका कैफे से मिल रहा रोजगार

सिसई के आजीविका दीदी कैफे में काम करनेवाली सारू को प्रत्येक दिन के हिसाब से डेढ़ सौ रुपये मिलते हैं. सारू कैफे में समोसा, धुसका, चाय और पकौड़े बनाती हैं. सारू कहती हैं कि पहले वो बेरोजगार थीं, लेकिन अब आजीविका कैफे ने उन्हें रोजगार दे दिया है, जिसके सहारे अब वो आत्मनिर्भर बन गयी हैं. सिसई के आजीविका दीदी कैफे में बदलाव और आत्मनिर्भर होतीं इन महिलाओं की तस्वीर दिखी, जो परिवार के सहयोग से घर की दहलीज लांघ कर बाहर निकलीं और आज अपने पैरों पर खड़े होकर दूसरी महिलाओं की भी मदद कर रही हैं.

जयश्री के कंधे पर चार बेटियों और एक बेटे की जिम्मेदारी

मुख्यमंत्री दाल-भात केंद्र, जो अब मुख्यमंत्री कैंटीन योजना के नाम से जाना जाता है. इसमें खाना बनानेवाली जयश्री देवी के पति नशा करते थे. कोई काम नहीं करते थे. इसके कारण घर की माली हालत काफी खराब थी. बच्चे बड़े हो रहे थे. उनकी पढ़ाई-लिखाई की चिंता अलग से परेशान कर रही थी. जयश्री बताती हैं कि उस समय उनके पास कोई रोजगार नहीं था. फिर महिला समूह की जानकारी मिली और समूह के जरिये ही आज मुख्यमंत्री कैंटीन योजना में खाना बना रही हैं. रोज डेढ़ सौ रुपये कमा लेती हैं. जिससे अब उनकी माली हालत में पहले की अपेक्षा सुधार हो रहा है. जयश्री देवी कहती हैं कि अब उनमें हिम्मत आ गयी है और वो किसी पर निर्भर नहीं हैं. उनके बच्चे अब स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं. वह कहती हैं कि अब वो अपनी बेटियों की शादी धूमधाम से करेंगी.

कैफे में खाना पकाती सखी मंडल की सदस्य जयश्री.

20 लाख महिलाओं को उज्ज्वला योजना से जोड़ने का लक्ष्य

मुख्यमंत्री रघुवर दास ने वर्ष 2018 तक राज्य की 20 लाख महिलाओं को उज्ज्वला योजना से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया है. उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना गरीब महिलाओं को धुआं और बीमारी से मुक्त करने तथा उन्हें स्वस्थ माहौल देने के लिए प्रधानमंत्री की सराहनीय पहल है. इस योजना के तहत राज्य सरकार केवल एलपीजी ही नहीं, बल्कि लाभुकों को गैस चूल्हा भी दे रही है. इसके लिये राज्य सरकार ने 300 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है. राज्य की आठ लाख महिलाओं को इसका लाभ मिला है. मार्च 2018 तक 20 लाख महिलाओं को उज्ज्वला योजना का लाभ सुनिश्चित कराना है. उन्होंने कहा कि समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी है. वर्ष 2022 तक नये भारत का निर्माण करना है. हमारी कोशिश होगी कि कोई ऐसा घर ना रहे, जहां लकड़ी के चूल्हे का उपयोग किया जाता हो.